सतर्क करने वाली कहानी: गम्भीर मलेरिया का शिकार हुए एक यात्री का कटु अनुभव

हैती का एक जाना-पहचाना दृश्य: एक “टैप-टैप” बस। (सीडीसी फोटो)

लेक चार्ल्स के पोर्ट मर्सी स्थित एक मानवतावादी समूह, फ्रेंड शिप्स के लिए काम करते हुए हेटी में तीन हफ़्ते गुजारने के बाद श्री. वर वाएस घर लौट रहे थे। वे 15 जनवरी, 2005 को हेटी से निकले थे। वे स्पिरिट ऑफ ग्रेस पर सवार थे, जो कि फ्रेंड शिप्स द्वारा उसके अभियान के संचालन में इस्तेमाल होने वाले जहाजों के बेड़े में से एक जहाज था। उन्होंने हेटी की राजधानी, पोर्ट-ऑ-प्रिस में कार्य किया था। वहां उन्होंने जहाज द्वारा ले जाई गई राहत सामग्री को उसके हकदारों तक पहुंचाया था। उन्हें अपने कार्य में बहुत आनन्द मिला और उन्हें यह कार्य बेहद सन्तुष्टदायक भी लगा क्योंकि पिछले 8 वर्षों के दौरान फ्रेंड शिप्स के लिए अब तक उन्होंने जितना भी कार्य किया था, उसमें उन्हें आनन्द मिला था। और इस कार्य के दौरान, जो कि हेटी की उनकी पहली यात्रा थी, उन्हें हेटी के लोगों और उनके देश से प्यार हो गया था। इतनी दिक्कतों का सामना करने के बावजूद वे लोग कितने जीवंत और उम्मीदों से भरे हुए थे।

हेटी में अपने पहले हफ्ते के दौरान, श्री वर वाएस जहाज पर सोते थे। फिर वे जमीन पर उतरे और अपने बाकी के ठहराव को पोर्ट-ऑ-प्रिस में उसके बाहरी इलाके में मध्यम आकार के तम्बू में सोते हुए बिताया। वहां मच्छर और अन्य कई परेशान कर देने वाले कीडे थे। विशेषकर रात में तो वे बहुत हो जाते थे और श्री वर वाएस खुद को काटे जाने या डंक से बचाने के लिए कभी-कभार ही कीड़े भगाने वाले उत्पादों का इस्तेमाल करते थे। लेकिन वे मच्छरदानी का इस्तेमाल नहीं करते थे, वह भी इस बात के बावजूद कि उनके सोने के क्वार्टर न तो एयर-कंडीशनिंग युक्त थे और न ही उन्हें मच्छरों के विरुद्ध जाली लगा कर सुरक्षित बनाया गया था। कीटनाशी-उपचारित मच्छरदानी, स्लीपर के चारों ओर एक सुरक्षा आवरण बनाकर श्री वर वाएस को रात में मच्छरों द्वारा काटे जाने से बचा लेती।

मलेरिया की गोलियों के बारे में

आमतौर पर जब लोग दुनिया के ऐसे हिस्सों की यात्रा पर जाते हैं, जहां मलेरिया का संचरण होता है तो उनके डॉक्टर मलेरिया की रोकथाम के लिए उन्हें दवाएं निर्दिष्ट करते हैं। श्री वर वाएस ने मलेरिया की कोई दवा नहीं ली, जबकि जहाज के डॉक्टर ने उन्हें सुझाव दिया था कि मलेरिया से बचने के लिए वे क्लोरोक्वीन टेबलेट लें। श्री वर वाएस ने सोचा कि मलेरिया से पीड़ित होने का उनका जोखिम कम था और वे मलेरिया की दवा से हो सकने वाले अप्रिय दुष्प्रभावों के विषय में चिन्तित थे। जहाज के चालक-दल के कई अन्य सदस्यों ने भी दवाओं को निर्देशों के अनुसार नहीं लिया और रोकथाम के अन्य दिशानिर्देशों का पालन भी नहीं किया। इसके अलावा, होंड्युरस में रोआटन द्वीप में और ग्वाटेमाला में फ्रेंड शिप्स के साथ काम करते हुए अपने सफर के दौरान भी श्री वर वाएस ने मलेरिया की दवा नहीं ली थी। चूंकि उन यात्राओं में उन्हें मलेरिया नहीं हुआ था, उन्होने सोचा कि इस यात्रा में भी उन्हें मलेरिया-रोधी दवा लेने की जरूरत नहीं है।

लेक चार्ल्स में बीमार पड़ना

19 फरवरी को जब लेक चार्ल्स में जहाज ने लंगर डाले तब भी श्री वर वाएस को बुख़ार था और उन्हें भूख नहीं लग रही थी। चूंकि उनकी तबीयत ठीक नहीं हो रही थी, अतः लौटने के कुछ ही समय बाद वे स्थानीय अस्पताल के आपातकालीन कक्ष में पहुंच गए, यह पता लगाने कि उन्हें क्या हुआ है। वहां उनकी बीमारी की गलत पहचान की गई और बताया गया कि उन्हें फ्लू हुआ है। अस्पताल ने उन्हें निर्जलीकरण (डीहायड्रेशन) से राहत देने के लिए इंट्रावीनस फ्लुइड चढ़ाए और उसी दिन घर भेज दिया। अगले कुछ दिनों के दौरान, उनके लक्षण और बिगड़ते गए और वे और भी ज़्यादा कमजोर और भ्रमित हो गए।
श्री वर वाएस को अपने बीमार होने के दौरान बाद वाले वक्त से अब कुछ भी याद नहीं आ रहा था। उनके बीमार होने के दौरान उनके जिन दोस्तों, रिश्तेदारों और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं ने उनकी देखभाल की थी अब उन्हें ही उनको उनकी बाकी की कहानी बतानी पड़ रही थी। श्री वर वाएस आपातकालीन कक्ष से आने के बाद दिन में कई बार बेहोश हुए। उनको देखने आए फ्रेंड शिप्स के एक डॉक्टर ने यह फैसला किया कि उन्हें फौरन अस्पताल ले जाने की जरूरत है। श्री वर वाएस 24 फरवरी को देर रात, लेक चार्ल्स में लूजियाना स्टेट यूनिवर्सिटी के एक अस्पताल, डब्लयू. ओ. मोस रीजनल मेडिकल सेंटर पहुंचे। अस्पताल में, उनकी आवाज़ अस्पष्ट हो चुकी थी, सरल आदेशों पर भी वे बहुत धीमी प्रतिक्रिया दे रहे थे। फिर उनके भ्रम की स्थिति और बिगड़ती

गई। लक्षण यह संकेत दे रहे थे कि उनका मस्तिष्क ठीक से कार्य नहीं कर रहा था। उन्हें 103 डिग्री फारेनहाइट का तेज बुख़ार था, उनका रक्तचाप खतरे के स्तर तक गिर चुका था, और उनकी हृदय गति और श्वसन दर असामान्य रूप से बहुत अधिक थे। उनके प्रयोगशाला परीक्षणों से पता चला कि उनमें खून की कमी हो गई थी और यह कि उनमें प्लेटलेट (रक्त का एक घटक जो रक्त का थक्का बनने के लिए जरूरी है) बहुत कम हो गए थे, जिसकी वजह से वो गम्भीर रक्तस्राव के जोखिम पर आ गए थे। प्रयोगशाला परीक्षणों से यह भी संकेत मिला कि उनका यकृत और उनके गुर्दे भी ठीक से काम नहीं कर रहे थे।

मिशीगन से श्री वर वाएस को देखने आए उनकी बहन मैरी लू तथा उनके भाई जॉर्ज, उनकी हालत देखकर व्यथित थे और उन्हें डर था कि वे बच नहीं पाएंगे। उन्होंने इस बारे में चर्चा की कि अगर वे बच जाते हैं, लेकिन उनके मस्तिष्क को क्षति पहुंचती है तो कौन-कौन सी दीर्घकालिक देखरेख व्यवस्थाएं की जानी चाहिए। फ्रेंड शिप्स में श्री वर वाएस के दोस्तों ने उसकी वेबसाइट पर लोगों से उनके स्वास्थ्य के लिए दुआ करने का संदेश लगा दिया।

निदान (रोग की पहचान)

श्री वर वाएस के भाग्य से, अस्पताल में उन्हें देखने वाले डॉक्टरों में से दो डॉक्टर ऐसे थे, जो क्रमशः पाकिस्तान और पेरू से थे और ये दोनों ही ऐसे देश हैं, जहां मलेरिया अक्सर होती है। जैसे ही उन्हें श्री वर वाएस का यात्रा इतिहास बताया गया, उन्होंने सम्भावित निदानों की सूची में मलेरिया को उच्च सम्भावना दे दी। उनका संदेह था कि पोर्ट-ऑ-प्रिंस में अपने ठहरने के दौरान श्री वर वाएस को मलेरिया परजीवी से संक्रमित किसी मच्छर ने काटा है। वे परजीवी श्री वर वाएस के रक्त में प्रवेश कर गए, जहां उन्होंने वृद्धि की और बेरोकटोक अपनी संख्या बढ़ाई क्योंकि श्री वर वाएस ने कोई भी मलेरिया-रोधी दवा नहीं ली थी।

अस्पताल के प्रयोगशालाविदों ने फौरन श्री वर वाएस के रक्त के नमूने लिए और उन्हें एक सूक्ष्मदर्शी स्लाइड पर फैला दिया (इसे “ब्लड स्मीयर” कहते हैं)। उन्होंने ब्लड स्मीयर की सूक्ष्मदर्शी के नीचे जांच की और उन्हें प्लाज़्मोडियि फाल्सीपैरम प्रजाति के मलेरिया परजीवी उसमें दिखाई दिए। इस प्रजाति के परजीवी द्वारा पैदा किया गया मलेरिया बहुत गम्भीर होता है और इससे पीड़ित लोगों की जान ले सकता है। श्री वर वाएस के रक्त में परजीवी की संख्या बहुत अधिक थी: ब्लड स्मीयर में हर 20 में से एक लाल रक्त कोशिका मलेरिया परजीवी द्वारा संक्रमित थी। इन परीक्षण परिणामों ने श्री वर वाएस के लक्षणों का कारण साफ कर दिया। उन्हें जो मलेरिया हुआ था वह उनके दिमाग पर असर डाल रहा था (इसे सेरेब्रिल मलेरिया कहते हैं) जो शरीर पर पड़ सकने वाले मलेरिया के सर्वाधिक घातक प्रभावों में से एक है।

उपचार

श्री वर वाएस में मलेरिया होने की पहचान होते ही उनके मामले में चिकित्सीय आपातस्थिति के रूप में उपचार शुरू कर दिया गया। उनकी द्रुत प्रदायगी के लिए एक सतत इंट्रावीनस ड्रिप के जरिए दो शक्तिशाली मलेरिया-रोधी दवाएं दी गई, पहली थी क्विनिडीन (कुनैन के समान) और दूसरी थी डॉक्सीसायक्लिन, एक एंटीबायोटिक जो मलेरिया परजीवी को भी मारती है। इसके अतिरिक्त मलेरिया परजीवी ने उनके रक्त को जो नुकसान पहुंचाया था उसकी पूर्ति के लिए उन्हें कई बार रक्त कोशिकाएं और प्लेटलेट्स चढ़ाई गई।

चूंकि संयुक्त राज्य अमेरिका के अधिकांश अस्पतालों की ही तरह, डब्ल्यू. ओ. मोस रीजनल मेडिकल सेंटर में भी मलेरिया का उपचार यदा-कदा ही

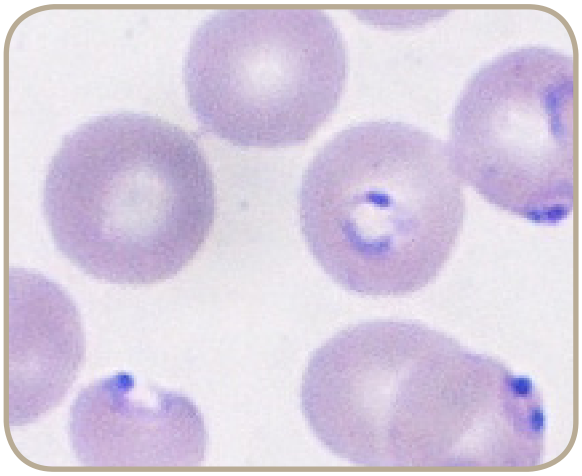

स्टुअर्ट वेर विस के खून का स्मीयर (नमूने की पतली परत), जिसमें प्लाज़्मोडियम फ़ेल्सीपेरम मलेरिया परजीवी से संक्रमित लाल रक्त कोशिकाएं दिख रही हैं। (सौजन्य एल.एस.यू. एच.सी.एस.डी. - डब्ल्यू.ओ. मॉस क्षेत्रीय चिकित्सा केंद्र)

स्टुअर्ट वेर विस (मध्य में) उस गहन चिकित्सा इकाई (आईसीयू) में जहां उनका उपचार हुआ था, और उनके चिकित्सकों में से दो चिकित्सक, डॉ. मोहम्मद सरवार (बाएं) तथा डॉ. कार्लोस एम. चाउचनिो (दाएं)। (सौजन्य एल.एस.यू. एच.सी.एस.डी. - डब्ल्यू.ओ. मॉस क्षेत्रीय चिकित्सा केंद्र)

स्टुअर्ट वेर विस, भले-चंगे हो जाने पर। पीछे दिख रहा है, स्पिरिट ऑफ़ ग्रेस, वह जलयान जो उन्हें हेटी ले गया था। (सौजन्य क्लार्क डेविस)

होता है, अतः उनके डॉक्टरों ने टेलीफोन पर सीडीसी से परामर्श किया** और इस कठिन मामले के उपचार के लिए सीडीसी के चिकित्सकों हेतु वेब-आधारित दिशानिर्देशों का भी इस्तेमाल किया। कई दिनों तक श्री वर वाएस का शरीर मलेरिया से लड़ता रहा। वे होश में होने के विभिन्न स्तरों के बीच चढ़ते-उतरते रहे।

आखिरकार, गहन चिकित्सा इकाई में चार दिन गुजारने के बाद, श्री वर वाएस की हालत में सुधार होना शुरु हुआ और अन्ततः वे सामान्य रूप से होश में आ गए और उनके जीवन संकेत भी सामान्य हो गए।
उन्हें अस्पताल से 10 दिन के बाद छुट्टी दे दी गई। अस्पताल में भर्ती रहने का उनका कुल खर्चा हुआ $23,383.15।

संकल्प

अपने इस कटु अनुभव के दो हफ्तों के बाद, इस साक्षात्कार के समय, श्री वर वाएस अपने जहाज पर वापस आ चुके हैं।
उन्होंने फिर से काम शुरू कर दिया है। हालांकि अब उन्हें बेहतर महसूस होता है, पर अभी भी वे अपनी पूरी ताकत वापस प्राप्त नहीं कर पाए हैं और उनका वज़न भी अभी वापस उतना नहीं पहुंचा है, जितना उनके बीमार होने से पहले था।

"अगली बार जब भी मैं मलेरिया के जोखिम वाले किसी क्षेत्र की यात्रा पर जाऊंगा तो अपनी दवाईयां जरूर लूंगा," श्री वर वाएस कहते हैं। "आशा करता हूं कि मेरी कहानी अन्य लोगों को भी ऐसा ही करने के लिए राज़ी कर लेगी।"

फुटनोट

* स्टुअर्ट वर वाएस ने सेंटर फॉर डिसीज़ कंट्रोल एंड प्रीवेंशन को उनका साक्षात्कार करने की, उनकी देखरेख करने वाले डॉक्टरों के साथ उनके चिकित्सीय पूर्ववृत्त पर चर्चा करने की और उनकी कहानी को प्रकाशित करने की अनुमति दी थी।

खुद को मलेरिया से सुरक्षित रखें

- यात्रा से 4-6 हफ़्ते पहले अपने डॉक्टर से मिलें।
- जैसे निर्धारित की गई हों, ठीक वैसे ही अपनी मलेरियारोधी गोलियां लें।
- मच्छरों के काटने से बचें, विशेष रूप से रात को।
- यदि आप यात्रा के दौरान या उसके बाद बीमार पड़ जाएं, तो हो सकता है कि वह मलेरिया हो: फ़ौरन डॉक्टर को दिखाएं।